

॥ आरती संग्रह ॥

॥ विषय अनुक्रमाणिका ॥

1. आरती का महत्व	02	20. विन्ध्येश्वरी जी	22
2. गणेश जी	04	21. सरस्वती जी	23
3. गणेश जी	04	22. अन्नपूर्णा जी	24
4. शिव जी	05	23. तुलसी माता जी	25
5. हनुमान जी	06	24. सीता जी	26
6. जगदीश जी	07	25. सन्तोषी माता जी	27
7. कृष्ण जी	08	26. वैष्णो देवी जी	28
8. कुंज बिहारी जी	09	27. अहोई माता जी	29
9. रामजन्म जी	10	28. कालीमाता जी	30
10. रामायण जी	11	29. भैरव जी	31
11. नरसिंह जी	12	30. सूर्य जी	32
12. भागवत पुराण जी	13	31. बृहस्पति जी	33
13. सत्यनारायण जी	14	32. शनि देव जी	34
14. अम्बे जी	15	33. साई बाबा जी	35
15. दुर्गा जी	16	34. धन्वंतरि जी	36
16. माँ जगदम्बे जी	17	35. एकादशी जी	37
17. जय आद्या शक्ति जी	18	36. बाबा बालक नाथ जी	36
18. लक्ष्मी जी	20	37. गोरख नाथ जी	39
19. गायत्री माता जी	21	38. तत	

● आरती का महत्व

आरती को 'आरात्रिक' अथवा 'आरात्रिक' और 'नीराजन' के नाम से भी पुकारा गया है। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है।

● स्कंद पुराण

मंत्रहीन क्रियाहीन यत् कृतं पूजनं हरे ।

सर्व सम्पूर्णता मेति कृतं नीराजने शिवे ॥

- अर्थ - पूजन मंत्रहीन तथा क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

● हरिभक्ति विलास

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः ।

सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम् ॥

- अर्थ - जो भी देवदेव चक्रधारी श्री विष्णु भगवान की आरती देखता है, वह सात जन्मों तक ब्राह्मण होकर अंत में परम पद को प्राप्त होता है।

● श्री विष्णु धर्मोत्तर

धूपं चरात्रिकं पश्येत काराभ्यां च प्रवन्देत ।

कुलकोटीं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम् ॥

- अर्थ - जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान विष्णु के परम पद को प्राप्त होता है।

आरती में पहले मूल मंत्र (जिस देवता का, जिस मंत्र से पूजन किया गया हो, उस मंत्र) के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिये और ढोल, नगाड़े, शखड, घड़ियाल आदि महावाद्यो के तथा जय-जयकार के शब्दों के साथ शुभ पात्र में घृत से या कर्पूर से विषम संख्या में अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिए।

- ततश्च मुलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् ।

महानिराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः ॥

- प्रज्वलेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा ।

आरात्रिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्दिकम् ॥

- अर्थ - साधारणतः पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे 'पञ्चप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से आरती की जाती है। कर्पूर से भी आरती होती है।

● पद्मपुराण में

कुङ्कुमागुरु कर्पूर घृत चंदन निर्मिताः ।
वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्तिकाम् ॥
कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः ।

- अर्थ - कुङ्कुम, अगर, कर्पूर, घृत और चंदन की पाँच या सात बत्तियां बनाकर शङ्ख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुवे आरती करनी चाहिए ।

● आरती के पाँच अंग

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया ।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा ॥

- चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् ।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि ॥
- अर्थ - प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शङ्ख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, आम व पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवे साष्टांग दण्डवत से आरती करें।
- आदौ चतुः पादतले च विष्णो द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम् ।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारा नारात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् ॥
- अर्थ - आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमाए, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुखमण्डल पर और सात बार समस्त अङ्गों पर घुमाए ।

॥ गणेशजी की आरती ॥

गणेश आरती 1

- सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नांची । नुरवी; पुरवी प्रेम कृपा जयाची ॥
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची । कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची ॥ १॥
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती ॥ दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥
- रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा । चंदनाची उटी कुमकुम केशरा ॥
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा । रुणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया ॥ २॥
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती ॥ दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥
- लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना । सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना ॥
दास रामाचा वाट पाहे सदना । संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवरवंदना ॥ ३॥
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती ॥ दर्शनमात्रे मनकामना पुरती, जय देव जय देव ॥

गणेश आरती 2

- जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥ ॥ १॥ जय गणेश जय गणेश ।
- एक दंत दयावंत, चार भुजाधारी ।
मस्तक सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी ॥ ॥ २॥ जय गणेश जय गणेश ।
- अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया ।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥ ॥ ३॥ जय गणेश जय गणेश ।
- पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन को भोग लगे, संत करे सेवा ॥ ॥ ४॥ जय गणेश जय गणेश ।
- दीनन की लाज राखो, शंभु सुतवारी ।
कामना को पूर्ण करो, जग बलिहारी ॥ ॥ ५॥ जय गणेश जय गणेश ।
- सूर श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥ ॥ ६॥ जय गणेश जय गणेश ।

॥ शिव जी की आरती ॥

- जय शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा ।
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अब्द्धांगी धारा ॥ ॥ १॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे ।
हंसासन, गरुडासन, वृषवाहन साजे ॥ ॥ २॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- दोय भुज चार चतुर्भुज, दस भुज अति सोहें ।
तीनों रुप निरखता, त्रिभुवन जन मोहें ॥ ॥ ३॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- अक्षमाला, बनमाला, रुण्डमाला धारी ।
चंदन, मृदमग चन्दा, भाले शशिधारी ॥ ॥ ४॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर अंगें ।
सनकादिक, ब्रम्हादिक, भूतादिक संगें ॥ ॥ ५॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- कर मध्य कमण्डल, चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्ता दुखहर्ता, जग पालन कर्ता ॥ ॥ ६॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्यें, ये तीनों एका ॥ ॥ ७॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- काशी में विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रम्हचारी ।
नित उठि भोग लगावत, सेवत नर नारी ॥ ॥ ८॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- त्रिगुण स्वामिजी की आरती, जो कोई नर गावें ।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावें ॥ ९॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा ।
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अब्द्धांगीधारा ॥ ॥ १०॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।

॥ हनुमान जी की आरती ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं ,जितेन्द्रियं,बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥
वातात्मजं वानरयुथ मुख्यं , श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥

- आरती किजे हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥ १॥
- जाके बल से गिरवर काँपे । रोग दोष जाके निकट ना झाँके ॥ २॥
- अंजनी पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ ३॥
- दे वीरा रघुनाथ पठाये । लंका जाये सिया सुधी लाये ॥ ४॥
- लंका-सी कोट समुद्र सी खाई । जात पवन सुत बार न लाई ॥ ५॥
- लंका जारि असुर संहारे । सिया राम जी के काज सँवारे ॥ ६॥
- लक्ष्मण मुर्छित पडे सकारे । आनि संजिवन प्राण उबारे ॥ ७॥
- पैठि पताल तोरि जम कारे । अहिरावण की भुजा उखारे ॥ ८॥
- बायें भुजा असुर दल मारे । दाहीने भुजा संत जन तारे ॥ ९॥
- सुरनर मुनिजन आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ॥ १०॥
- कचनं थाल कपूर लौ छाई । आरती करत अंजनी माई ॥ ११॥
- जो हनुमान जी की आरती गाये । बसहिं बैकुंठ परम पद पायै ॥ १२॥
- लंका विध्वंश किये रघुराई । तुलसीदास स्वामी किर्ती गाई ॥ १३॥
- आरती किजे हनुमानलला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥ १४॥

॥ जगदीश जी की आरती ॥

- ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ १॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- जो ध्यावे फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ॥ २॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिनु और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ३॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ४॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ५॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ६॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ७॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ८॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- तन-मन-धन, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ९॥ ॐ जय जगदीश हरे ।
- श्याम सुंदर जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ १०॥ ॐ जय जगदीश हरे ।

॥ आरती श्री कृष्ण जी की ॥

- ॐ जय श्री कृष्ण हरे, प्रभु जय श्री कृष्ण हरे ।
भक्तन के दुख टारे पल में दूर करे ॥ ॥१॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- परमानन्द मुरारी मोहन गिरधारी ।
जय रस रास बिहारी जय जय गिरधारी ॥ ॥२॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- कर कंचन कटि कंचन श्रुति कुंडल माला ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे बनमाला ॥ ॥३॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- दीन सुदामा तारे, दरिद्र दुख टारे ।
जग के फ़ंद छुड़ाए, भव सागर तारे ॥ ॥४॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- हिरण्यकश्यप संहारे नरहरि रूप धरे ।
पाहन से प्रभु प्रगटे जन के बीच पड़े ॥ ॥५॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- केशी कंस विदारे नर कूबेर तारे ।
दामोदर छवि सुन्दर भगतन रखवारे ॥ ॥६॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- काली नाग नथैया नटवर छवि सोहे ।
फ़न फ़न चढ़त ही नागन, नागन मन मोहे ॥ ॥७॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।
- राज्य विभिषण थापे सीता शोक हरे ।
द्रुपद सुता पत राखी करुणा लाज भरे ॥ ॥८॥ जय जय श्री कृष्ण हरे ।

॥ इति आरती श्रीकृष्ण सम्पूर्णम् ॥

॥ कुंज बिहारी (कृष्ण) जी की आरती ॥

- आरती कुंजबिहारी की, श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

- गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चंद्र सी झलक; ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥

॥१॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ।

- कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥

॥२॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ।

- जहां ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा, बसी सिव सीस, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरन छवि श्रीबनवारी की ॥

॥३॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ।

- चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद,
कटत भव फंद, टेर सुन दीन दुखारी की ॥

॥४॥

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ।

॥ इति आरती श्री कुंज बिहारी सम्पूर्णम् ॥

॥ रामचन्द्र जी की आरती ॥

- श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नव कंज लोचन, कंजमुख, करकुंज, पदकं-जारुणं ॥ ॥१॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....
- कन्दर्प अगणित अमित छबि, नवनीलनीरद सुन्दरं ।
पट पीत मानहु तडीत रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥ ॥२॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....
- भजु दीनबंधु दिनेश दानवदै त्यवंशनिकंदनं ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशलचंद दशरथ-नंदनं ॥ ॥३॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....
- सिर मुकुट कूडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानु भुजा शरा चाप धर, संग्राम जित खर दुषणं ॥ ॥४॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....
- इति वदित तुलसीदास शंकर शेष मुनिमनरंजनं ।
मम हृदयकंजनिवास कुरु, कमदि खल दल गंजनं ॥ ॥५॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....
- मन जाहि राचेऊ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥ ॥६॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....
- एहि भांति गौरी असीस सुन सिय हित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥ ॥७॥
श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं । श्री राम श्री राम....

॥ इति आरती श्री रामचन्द्रजी सम्पूर्णम् ॥

॥ रामायण जी की आरती ॥

- आरती श्री रामायण जी की । कीरति कलित ललित सिय पी की ॥
- गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीक बिग्यान बिसारद ॥
शुक सनकादिक सेष अरु सारद । बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥ १॥
आरती श्री रामायण जी की ।
- गावत बेद पुरान अष्टदस । छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस ॥
मुनि जन धन संतन को सरबस । सार अंश सम्मत सबही की ॥ २॥
आरती श्री रामायण जी की ।
- गावत संतत शंभु भवानी । अरु घट संभव मुनि बिग्यानी ॥
व्यास आदि कबबर्ज बखानी । काग भुशुंडि गरुड़ के ही की ॥ ३॥
आरती श्री रामायण जी की ।
- कलिमल हरनि विषय रस फीकी । सुभग सिंगार भगति जुबती की ॥
दलन रोग भव भूरि अमी की । तात मातु सब बिधि तुलसी की ॥ ४॥
आरती श्री रामायण जी की ।

॥ इति आरती श्री रामायण सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती श्री नरसिंह भगवान की ॥

- ॐ जय नरसिंह हरे, प्रभु जय नरसिंह हरे।
स्तम्भ फाड़ प्रभु प्रकटे, स्तम्भ फाड़ प्रभु प्रकटे, जन का ताप हरे ॥ १ ॥
ॐ जय नरसिंह हरे ।
- तुम हो दीन दयाला, भक्तन हितकारी, प्रभु भक्तन हितकारी।
अद्भुत रूप बनाकर, अद्भुत रूप बनाकर, प्रकटे भय हारी ॥ २ ॥
ॐ जय नरसिंह हरे ।
- सबके हृदय विदारण, दुस्यु जियो मारी, प्रभु दुस्यु जियो मारी।
दास जान अपनायो, दास जान अपनायो, जन पर कृपा करी ॥ ३ ॥
ॐ जय नरसिंह हरे ।
- ब्रह्मा करत आरती, माला पहिनावे, प्रभु माला पहिनावे।
शिवजी जय जय कहकर, पुष्पन बरसावे ॥ ४ ॥
ॐ जय नरसिंह हरे ।

॥ इति आरती श्री नरसिंह भगवान सम्पूर्णम् ॥

॥ भागवत पुराण जी की आरती ॥

- आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- महा पुराण भागवत निर्मल,
शुक-मुख-विगलित निगम कल्प कल ।
परमानंद सुधा-रसमय फल,
लीला रति यह रस निधान की ॥

॥१॥

आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणी,
जन्म-मृत्यु भव-भय हारिणी ॥
सेवत संत सकल सुख कारिणी,
महौषधि हरि-चरित्र गान की ॥

॥२॥

आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- विषय विलास विमोह विनाशिनी,
विमल विराग विवेक विकासिनी ॥
भगवत-तत्त्व-रहस्य-विकासिनी,
परम ज्योति परमात्म ज्ञान की ॥

॥३॥

आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

- परमहंस-मुनि मन उल्लासिनी,
रसिक हृदय रस रास-विलासिनी ॥
भुक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम सुदासिनी,
कथा अकिंचन-प्रिय सुजान की ॥

॥४॥

आरती अति पावन पुराण की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की ॥

॥ श्री सत्यनारायण जी की आरती ॥

- ॐ जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥ ॥ १॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- रत्नजडित सिंहासन , अब्जुत छवि राजें ।
नारद करत निरंजन, घंटा ध्वनी बाजें ॥ ॥ २॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो ।
बूढ़ों ब्राम्हण बनके, कंचन महल कियो ॥ ॥ ३॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी ।
चंद्रचूड एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी ॥ ॥ ४॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- वैश्य मनोरथ पायों, श्रद्धा तज दिन्ही ।
सो फल भोग्यों प्रभूजी, फिर स्तुति किन्ही ॥ ॥ ५॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- भाव भक्ति के कारन, छिण-छिण रुप धरयो ।
श्रद्धा धारण किन्ही, तिनको काज सरयो ॥ ॥ ६॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करि ।
मनवांछित फल दिन्हो, दीन दयाल हरि ॥ ॥ ७॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- चढत प्रसाद सवायों, कदली फल मेवा ।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्य देवा ॥ ॥ ८॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।
- सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
भणत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॥ ९॥ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी ।

॥ इति आरती श्री सत्यानारायण जी सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री अम्बेजी की आरती ॥

- जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निसदिन ध्यावत, हरि ब्रम्हा शिवरी ॥ ॥ १॥ जय अम्बे गौरी ।
- मांग सिंदुर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ ॥ २॥ जय अम्बे गौरी ।
- कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ ॥ ३॥ जय अम्बे गौरी ।
- केहरि वाहन राजत, खडग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःख हारी ॥ ॥ ४॥ जय अम्बे गौरी ।
- कानन कुंडल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ॥ ॥ ५॥ जय अम्बे गौरी ।
- शुंभ निशुम्भु बिदारे, महिषासुर धाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ॥ ॥ ६॥ जय अम्बे गौरी ।
- चंड मुंड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ॥ ७॥ जय अम्बे गौरी ।
- ब्रम्हाणी रुद्राणी, तुम कमलारानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ॥ ८॥ जय अम्बे गौरी ।
- चौसंठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुं ।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरुं ॥ ॥ ९॥ जय अम्बे गौरी ।
- तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तनकी दुःखहर्ता, सुख सम्पत्ति कर्ता ॥ ॥ १०॥ जय अम्बे गौरी ।
- भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ ॥ ११॥ जय अम्बे गौरी ।
- कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बात्ती ।
श्रीमाल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती ॥ ॥ १२॥ जय अम्बे गौरी ।
- या अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥ ॥ १३॥ जय अम्बे गौरी ।
- जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निसदिन ध्यावत, हरि ब्रम्हा शिवरी ॥ ॥ १४॥ जय अम्बे गौरी ।

॥ दुर्गा जी की आरती ॥

- अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती
- तेरे भक्त जनो पर माता भीर पड़ी है भारी ।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी ॥
सौ-सौ सिंहों से है बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली, दुष्टों को तू ही ललकारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
- माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता ।
पूत-कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता ॥
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली, दुखियों के दुखड़े निवारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
- नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना ।
हम तो माँगें माँ तेरे चरणों में छोटा सा कोना ॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली, सतियों के सत को संवारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।
- चरण शरण मे खडे तुम्हारी, ले पूजा की थाली ।
वरद हस्त सर पर रख दो, माँ सकंट हरने वाली ॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओ वाली, भक्तो के कारज तू ही सारती ।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती ।

॥ माँ जगदंबे जी की आरती ॥

- आरती जगजननी मैं तेरी गाऊं ।
तुम बिन कौन सुने वरदाती,
किस को जा कर विनय सुनाऊं ॥ ॥१॥ आरती जग जननी तेरी गाऊं ।
- असुरों ने देवों को सताया,
तुमने रूप धरा महामाया।
उसी रूप का मैं दर्शन चाहूँ ॥ ॥२॥ आरती जग जननी तेरी गाऊं ।
- रक्तबीज मधुकैटभ मारे,
अपने भक्तों में काज सँवारे ।
मैं भी तेरा दास कहाऊं ॥ ॥३॥ आरती जग जननी तेरी गाऊं ।
- आरती तेरी करू वरदाती,
हृदय का दीपक नैनो की वाती ।
निसदिन प्रेम की ज्योति जगाऊं ॥ ॥४॥ आरती जग जननी तेरी गाऊं ।
- ध्यानु भक्त तुमरा यश गाया,
जिस ध्याया, माता फल पाया ।
मैं भी दर तेरे सीस झुकाऊं ॥ ॥५॥ आरती जग जननी तेरी गाऊं ।
- आरती तेरी जो कोई गावे,
चमन सभी सुख सम्पति पावे ।
मैया चरण कमल राज चाहूँ ॥ ॥६॥ आरती जग जननी तेरी गाऊं ।

॥ जय आद्या शक्ति जी की आरती ॥

- जय आद्या शक्ति, माँ जय आद्या शक्ति ।
अखंड ब्रह्माण्ड दिपाव्या, पडवे पंडित माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- द्वितीया बेऊ स्वरूप शिवशक्ति जाणुं, माँ शिवशक्ति जाणुं ।
ब्रह्मा गणपती गाये (२), हर गाये हर माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- तृतीया त्रण स्वरूप त्रिभुवन माँ बैठा, माँ त्रिभुवन माँ बैठा ।
दया थकी तरवेणी (२), तमे तरवेणी माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- चौथे चतुरा महालक्ष्मी माँ सचराचर व्याप्य, माँ सचराचर व्याप्य ।
चार भुजा चौ दिशा (२), प्रगटया दक्षिण माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- पंचमी पन्च ऋषि पंचमी गुण पद्मा, माँ पंचमी गुण पद्मा ।
पंच तत्व त्या सोहिये (२), पंचे तत्वो माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- षष्ठी तू नारायणी महिषासुर मार्यो, माँ महिषासुर मार्यो ।
नर नारीना रूपे (२), व्याप्य सर्वे माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- सप्तमी सप्त पाताळ सावित्री संध्या, माँ सावित्री संध्या ।
गौ गंगा गायत्री (२), गौरी गीता माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- अष्टमी अष्ट भुजा आई आनन्दा, माँ आई आनन्दा ।
सुरिवर मुनिवर जनम्या (२), देव दैत्यों माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- नवमी नवकुळ नाग सेवे नवदुर्गा, माँ सेवे नवदुर्गा ।
नवरात्री ना पूजन, शिवरात्रि ना अर्चन, किधा हर ब्रह्मा ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- दशमी दश अवतार जय विजया दशमी, माँ जय विजया दशमी ।
रामे रावण मार्यो (२), रावण रोयो माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- एकादशी अगियारस, कात्यायनी कामा, माँ कात्यायनी कामा ।
कामादुर्गा कालिका (२), श्यामा ने रामा ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- बारसे बाला रूप, बहुचरी अंबा माँ, माँ बहुचरी अंबा माँ ।
बटुक भैरव सोहिये, काळ भैरव सोहिये, तारा छे तुज माँ ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।

- तेरसे तुलजा रूप, तमे तारुणि माता, मैया तमे तारुणि माता ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव (२) गुण तारा गाता ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- चौदश चौदा रुप, चंडी चामुंडा, माँ चंडी चामुंडा ।
भावभक्ति कई आपो, चतुराई कई आपो, सिंहवाहिनी माता ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- पुनमे कुंभ भयों, सांभळजो करुणा, माँ सांभळजो करुणा ।
वशिष्ठ देवे वखाण्या, मारकंड देवे वखाण्या, गाए शुभ कविता ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- संवत सोळ सत्तावन, सोळसे बावीस माँ, मा सोळसे बावीस मां ।
संवत सोळसे प्रगट्या, रेवा ने तीरे, मा गंगाने तीरे, मा जमना ने तीरे ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- त्रंबावटी नगरी, माँ रुपावती नगरी, माँ मंछावती नगरी ।
सोळ सहस्र त्यां सेहिए (२), क्षमा करो गौरी, माँ दया करो गौरी ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- शिव-शक्तिनी आरती जे कोई गाशे, माँ जे भावे गाशे ।
भणे शिवानन्द स्वामी (२), सुख सम्पति थासे, हर कैलाशे जाशे, माँ अंबा दुःख हरशे ॥
ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- एकमे एक स्वरुप, अंतर नव धरशो, मा अंतर नव धरशो ।
भोळा भवानी ले भजता (२), भव सागर तरशो ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- भाव ना जाणु, भक्ति ना जाणु, नव जाणु सेवा, माँ नव जाणु सेवा ।
वल्लभ भटने आपी, ऐवी अमने आपो चरणोनी सेवा ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- मानी चुंदडी लाल गुलाल, शोभा अति सारी, माँ शोभा अति सारी ।
आंगण कुकड नाचे (२), जय बौहचर माडी ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।
- मानो मंडप लाल गुलाल शोभा अति भारी, मा शोभा अति सारी
उडे अबीर गुलाल (२), जय बहुचर माडी ॥ ॐ जयो जयो माँ जगदम्बे ... ।

॥ लक्ष्मीजी की आरती ॥

- ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ ॥ १॥ जय लक्ष्मी माता ।
- उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॥ २॥ जय लक्ष्मी माता ।
- दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता ।
जोकोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ ॥ ३॥ जय लक्ष्मी माता ।
- तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ ॥ ४॥ जय लक्ष्मी माता ।
- जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ ॥ ५॥ जय लक्ष्मी माता ।
- तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता ॥ ॥ ६॥ जय लक्ष्मी माता ।
- शुभ-गुण-मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ॥ ॥ ७॥ जय लक्ष्मी माता ।
- महालक्ष्मीजी की आरती, जो कई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप शमन हो जाता ॥ ॥ ८॥ जय लक्ष्मी माता ।

॥ इति श्री लक्ष्मी आरती सम्पूर्णम् ॥

॥ गायत्री माँ जी की आरती ॥

- जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।
सत् मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता ॥१॥ जयति जय गायत्री माता ।
- आदि शक्ति तुम अलख निरञ्जन जग पालन करीं ।
दुःख, शोक, भय, क्लेश, कलह दारिद्र्य दैन्य हरीं ॥२॥ जयति जय गायत्री माता ।
- ब्रह्म रुपिणी, प्रणत पालिनी, जगतधातृ अम्बे ।
भवभयहारी, जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे ॥ ३॥ जयति जय गायत्री माता ।
- भयहारिणि भवतारिणि अनघे, अज आनन्द राशी ।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी ॥४॥ जयति जय गायत्री माता ।
- कामधेनु सत् चित् आनन्दा, जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री सीत ॥५॥ जयति जय गायत्री माता ।
- ऋग्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी सहस्रार, सुषुम्ना, शोभा गुण गरिमे ॥६॥ जयति जय गायत्री माता ।
- स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रहाणी, राधा, रुद्राणी ।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी ॥७॥ जयति जय गायत्री माता ।
- जननी हम है, दीन, हीन, दुःख, दरिद्र के घेरे ।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत, तऊ बालक है तेरे ॥८॥ जयति जय गायत्री माता ।
- स्नेह सनी करुणामयि माता, चरण शरण दीजै ।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै ॥९॥ जयति जय गायत्री माता ।
- काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये ।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ॥१०॥ जयति जय गायत्री माता ।
- तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि त्राता ।
सत् मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता ॥११॥ जयति जय गायत्री माता ।

॥ इति आरती श्री गायत्री माता सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती श्री विन्ध्येश्वरी जी की ॥

- सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी तेरा पार न पाया ॥ ॥१॥ सुन मेरी देवी ।
- पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तरी भेंट चढ़ाया ॥ ॥२॥ सुन मेरी देवी ।
- सुवा चोली तेरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया ॥ ॥३॥ सुन मेरी देवी ।
- नंगे पग अकबर आया सोने का छत्र चढ़ाया ॥ ॥४॥ सुन मेरी देवी ।
- उँचे उँचे पर्वत भयो दिवालो नीचे शहर बसाया ॥ ॥५॥ सुन मेरी देवी ।
- सतयुग द्वापर त्रेता मध्ये कलियुग राज सबाया ॥ ॥६॥ सुन मेरी देवी ।
- धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया ॥ ॥७॥ सुन मेरी देवी ।
- ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावैं मनवांछित फल पाया ॥ ॥८॥ सुन मेरी देवी ।

॥ इति श्री विन्ध्येश्वरी आरती सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती श्री सरस्वती जी की ॥

- जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता ॥ ॥१॥ जय सरस्वती माता...॥
- चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी ।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी ॥ ॥२॥ जय सरस्वती माता...॥
- बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला ।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला ॥ ॥३॥ जय सरस्वती माता...॥
- देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठी मंथरा दासी, रावण संहार किया ॥ ॥४॥ जय सरस्वती माता...॥
- विद्या ज्ञान प्रदायिनि, ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो ॥ ॥५॥ जय सरस्वती माता...॥
- धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो ॥ ॥६॥ जय सरस्वती माता...॥
- माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे ॥ ॥७॥ जय सरस्वती माता...॥
- जय सरस्वती माता, जय जय सरस्वती माता ।
सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता ॥

॥ इति आरती श्री सरस्वती सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती देवी अन्नपूर्णा जी की ॥

- बारम्बार प्रणाम, मैया बारम्बार प्रणाम
- जो नहीं ध्यावे तुम्हें अम्बिके, कहां उसे विश्राम ।
अन्नपूर्णा देवी नाम तिहारो, लेत होत सब काम ॥ ॥१॥ बारम्बार प्रणाम ।
- प्रलय युगान्तर और जन्मान्तर, कालान्तर तक नाम ।
सुर सुरों की रचना करती, कहाँ कृष्ण कहाँ राम ॥ ॥२॥ बारम्बार प्रणाम ।
- चूमहि चरण चतुर चतुरानन, चारु चक्रधर श्याम ।
चंद्रचूड़ चन्द्रानन चाकर, शोभा लखहि ललाम ॥ ॥३॥ बारम्बार प्रणाम ।
- देवि देव! दयनीय दशा में दया-दया तब नाम ।
त्राहि-त्राहि शरणागत वत्सल शरण रूप तब धाम ॥ ॥४॥ बारम्बार प्रणाम ।
- श्रीं, ह्रीं श्रद्धा श्री ऐ विद्या श्री क्लीं कमला काम ।
कांति, भ्रांतिमयी, कांति शांतिमयी, वर दे तू निष्काम ॥ ॥५॥ बारम्बार प्रणाम ।

॥ इति आरती देवी अन्नपूर्णा सम्पूर्णम् ॥

॥ तुलसी माता जी की आरती ॥

- तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।
- धन तुलसी पूरण तप कीनो, शालिग्राम बनी पटरानी ।
जाके पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति कमल चरण लपटानी ॥ ॥१॥
तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।
- धूप-दीप-नवैद्य आरती, पुष्पन की वर्षा बरसानी ।
छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसी हरि एक ना मानी ॥ ॥२॥
तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।
- सभी सखी मैया तेरो यश गावें, भक्तिदान दीजै महारानी ।
नमो-नमो तुलसी महारानी, तुलसी महारानी नमो-नमो ॥ ॥३॥
तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।

तुलसी माता की आरती .. २

- जय जय तुलसी माता, सब जग की सुख दाता सब की वर माता ।
- सब योगों के ऊपर, सब रोगों के ऊपर ।
रुज से रक्षा करके, सब की भव त्राता ॥ ॥१॥ जय जय तुलसी माता ।
- बटु पुत्री हे श्यामा, सुर बल्ली हे ग्राम्या ।
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे, सो नर तर जाता ॥ ॥२॥ जय जय तुलसी माता ।
- हरि के शीश विराजत, त्रिभुवन से हो वन्दित ।
पतित जनो की तारिणी, तुम हो विख्याता ॥ ॥३॥ जय जय तुलसी माता ।
- लेकर जन्म विजन में, आई दिव्य भवन में ।
मानव लोक तुम्ही से, सुख संपति पाता ॥ ॥४॥ जय जय तुलसी माता ।
- हरि को तुम अति प्यारी, श्याम वर्ण तुम्हारी ।
प्रेम अजब हैं उनका, तुमसे कैसा नाता ॥ ॥५॥ जय जय तुलसी माता ।

॥ इति आरती तुलसी माता सम्पूर्णम् ॥

॥ सीता जी की आरती ॥

- सीता बिराजथि मिथिलाधाम सब मिलिकय करियनु आरती।
संगहि सुशोभित लछुमन-राम सब मिलिकय करियनु आरती ॥
- विपदा विनाशिनि सुखदा चराचर, सीता धिया बनि अयली सुनयना घर
मिथिला के महिमा महान...सब मिलिकय करियनु आरती ॥ ॥१॥ सीता बिराजथि ... ।
- सीता सर्वेश्वरि ममता सरोवर, बायाँ कमल कर दायाँ अभय वर
सौम्या सकल गुणधाम..सब मिलिकय करियनु आरती ॥ ॥२॥ सीता बिराजथि ... ।
- रामप्रिया सर्वमंगल दायिनि, सीता सकल जगती दुःखहारिणि
करथिन सभक कल्याण..सब मिलिकय करियनु आरती ॥ ॥३॥ सीता बिराजथि ... ।
- सीतारामक जोड़ी अतिभावन, नैहर सासुर कयलनि पावन
सेवक छथि हनुमान..सब मिलिकय करियनु आरती ॥ ॥४॥ सीता बिराजथि ... ।
- ममतामयी माता सीता पुनीता, संतन हेतु सीता सदिखन सुनीता
धरणी-सुता सबठाम..सब मिलिकय करियनु आरती ॥ ॥५॥ सीता बिराजथि ... ।
- शुक्ल नवमी तिथि वैशाख मासे, 'चंद्रमणि' सीता उत्सव हुलासे
पायब सकल सुखधाम..सब मिलिकय करियनु आरती ॥ ॥६॥ सीता बिराजथि ... ।

सीता जी की आरती - 2

- आरती श्री जनक दुलारी की, सीता जी रघुवर प्यारी की ॥
- जगत जननी जग की विस्तारिणी, नित्य सत्य साकेत विहारिणी ।
परम दयामयी दिनोधारिणी, सीता मैया भक्तन हितकारी की ॥ ॥१॥ आरती श्री जनक दुलारी की..।
- सती श्रोमणि पति हित कारिणी, पति सेवा वित्त वन वन चारिणी ।
पति हित पति वियोग स्वीकारिणी, त्याग धर्म मूर्ति धरी की ॥ ॥२॥ आरती श्री जनक दुलारी की..।
- विमल कीर्ति सब लोकन छाई, नाम लेत पवन मति आई ।
सुमीरात काटत कष्ट दुख दाई, शरणागत जन भय हरी की ॥ ॥३॥ आरती श्री जनक दुलारी की..।

॥ इति आरती श्री सीता जी सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री सन्तोषी माता की आरती ॥

- जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ।
अपने सेवक जन की सुख सम्पति दाता ॥ ॥ १॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- सुन्दर चीर सुनहरी माँ धारण कीन्हो,
हीरा पन्ना दमके तन शृंगार कीन्हो ॥ ॥ २॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- गेरू लाल छटा छबि बदन कमल सोहे,
मंद हँसत करुणामयि त्रिभुवन मन मोहे ॥ ॥ ३॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- स्वर्ण सिंहासन बैठी चँवर डुले प्यारे,
धूप दीप मधु मेवा, भोज धरे न्यारे ॥ ॥ ४॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- गुड़ और चना परम प्रिय ता में संतोष कियो,
संतोषी कहलाई भक्तन विभव दियो ॥ ॥ ५॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सो ही,
भक्त मंडली छाई कथा सुनत मो ही ॥ ॥ ६॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- मंदिर जग मग ज्योति मंगल ध्वनि छाई,
बिनय करें हम सेवक चरनन सिर नाई ॥ ॥ ७॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजै,
जो मन बसे हमारे इच्छित फल दीजै ॥ ॥ ८॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- दुखी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किये,
बहु धन धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये ॥ ॥ ९॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- ध्यान धरे जो तेरा वाँछित फल पायो,
पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो ॥ ॥ १०॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे,
संकट तू ही निवारे दयामयी अम्बे ॥ ॥ ११॥ मैया जय सन्तोषी माता ।
- सन्तोषी माता की आरती जो कोई जन गावे,
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति जी भर के पावे ॥ ॥ १६॥ मैया जय सन्तोषी माता ।

॥ इति आरती श्री सन्तोषी माता सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती श्री वैष्णो देवी ॥

- जय वैष्णवी माता, मैया जय वैष्णवी माता ।
हाथ जोड़ तेरे आगे, आरती मैं गाता ॥ ॥१॥ जय वैष्णव माता ।
- शीश पे छत्र विराजे, मूरतिया प्यारी ।
गंगा बहती चरनन, ज्योति जगे न्यारी ॥ ॥२॥ जय वैष्णव माता ।
- ब्रह्मा वेद पढ़े नित द्वारे, शंकर ध्यान धरे ।
सेवक चंवर डुलावत, नारद नृत्य करे ॥ ॥३॥ जय वैष्णव माता ।
- सुन्दर गुफा तुम्हारी, मन को अति भावे ।
बार-बार देखन को, ऐ माँ मन चावे ॥ ॥४॥ जय वैष्णव माता ।
- भवन पे झण्डे झूलें, घंटा ध्वनि बाजे ।
ऊँचा पर्वत तेरा, माता प्रिय लागे ॥ ॥५॥ जय वैष्णव माता ।
- पान सुपारी ध्वजा नारियल, भेंट पुष्प मेवा ।
दास खड़े चरणों में, दर्शन दो देवा ॥ ॥६॥ जय वैष्णव माता ।
- जो जन निश्चय करके, द्वार तेरे आवे ।
उसकी इच्छा पूरण, माता हो जावे ॥ ॥७॥ जय वैष्णव माता ।
- इतनी स्तुति निश-दिन, जो नर भी गावे ।
कहते सेवक ध्यानू, सुख सम्पत्ति पावे ॥ ॥८॥ जय वैष्णव माता ।

॥ इति आरती श्री वैष्णो देवी सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती अहोई माता की ॥

- जय अहोई माता जय अहोई माता ।
तुमको निसदिन ध्यावत हरि विष्णु धाता ॥ ॥१॥ जय अहोई माता ।
- ब्राहमणी रुद्राणी कमला तू हे है जग दाता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ ॥२॥ जय अहोई माता ।
- माता रूप निरंजन सुख संपत्ती दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत नित मंगल पाता ॥ ॥३॥ जय अहोई माता ।
- तू हे है पाताल बसंती तू हे है सुख दाता ।
कर्मा प्रभाव प्रकाशक जज्जिदधि से त्राता ॥ ॥४॥ जय अहोई माता ।
- जिस घर तारो वास वही में गुण आता ।
कर ना सके सोई कर ले मन नहीं घबराता ॥ ॥५॥ जय अहोई माता ।
- तुम बिन सुख ना होवय पुतरा ना कोई पाता ।
खान-पान का वैभव तुम बिन नहीं आता ॥ ॥६॥ जय अहोई माता ।
- सुभ गुण सुन्दर युक्ता शियर निदधि जाता ।
रतन चतुर्दश तौकू कोई नहीं पाता ॥ ॥७॥ जय अहोई माता ।
- श्री अहोई मा की आरती जो कोई गाता ।
उर् उमंग अत्ती उपजय पाप उत्तर जाता ॥ ॥८॥ जय अहोई माता ।

॥ इति आरती अहोई माता सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती श्री कालीमाता की ॥

- मंगल की सेवा सुन मेरी देवा , हाथ जोड तेरे द्वार खडे ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेट धरे ॥१॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- सुन जगदम्बे न कर विलम्बे, संतन के भडांर भरे ।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जै काली कल्याण करे ॥२॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- बुद्धि विधाता तू जग माता , मेरा कारज सिद्ध रे ।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन पडे ॥ ॥३॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- जब जब भीड पडी भक्तन पर, तब तब आप सहाय करे ।
गुरु के वार सकल जग मोहयो, तरुणी रूप अनूप धरे ॥ ॥४॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- माता होकर पुत्र खिलावे, कही भार्या भोग करे ।
संतन सुखदाई सदा सहाई, संत खडे जयकार करे ॥ ॥५॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये, भेट देन सब द्वार खडे ।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे ॥ ॥६॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- वार शनिश्चर कुकम बरणी, जब लुकुन्ड पर हुकुम करे ।
खड्ग खप्पर त्रिशुल हाथ लिये, रक्त बीज को भस्म करे ॥ ॥७॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- शुम्भ निशुम्भ को क्षण मे मारे, महिषासुर को पकड दले ।
आदित वारी आदि भवानी ,जन अपने को कष्ट हरे ॥ ॥८॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- कुपित होकर दनव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चूर करे ।
जब तुम देखी दया रूप हो, पल मे सकंट दूर करे ॥ ॥९॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता, जन की अर्ज कबूल करे ।
सात बार की महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे ॥ ॥१०॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- सिंह पीठ पर चढी भवानी, अटल भवन मे राज्य करे ।
दर्शन पावे मंगल गावे, सिद्ध साधक तेरी भेट धरे ॥ ॥११॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- ब्रह्मा वेद पढे तेरे द्वारे, शिव शंकर हरी ध्यान धरे ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चँवर कुबेर डुलाय रहे ॥ ॥१२॥ सन्तन प्रतिपाली ।
- जय जननी जय मातु भवानी, अटल भवन मे राज्य करे ।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, मैया जै काली कल्याण करे ॥१३॥ सन्तन प्रतिपाली ।

॥ इति आरती श्री कालीमाता सम्पूर्णम् ॥

॥ भैरव जी की आरती ॥

- जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा ।
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा ॥ ॥१॥ जय भैरव देवा प्रभु ।
- तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक ।
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥ ॥२॥ जय भैरव देवा प्रभु ।
- वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी ।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥ ॥३॥ जय भैरव देवा प्रभु ।
- तुम बिन सेवा देवा सफल नहीं होवे ।
चौमुख दीपक दर्शन सबका दुःख खोवे ॥ ॥४॥ जय भैरव देवा प्रभु ।
- तेल चटकि दधि मिश्रित भाषावलि तेरी ।
कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी ॥ ॥५॥ जय भैरव देवा प्रभु ।
- पाव घूंघरु बाजत अरु डमरु डमकावत ।
बटुकनाथ बन बालकजन मन हरषावत ॥ ॥६॥ जय भैरव देवा प्रभु ।
- बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे ।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे ॥ ॥७॥ जय भैरव देवा प्रभु ।

॥ इति भैरव आरती सम्पूर्णम् ॥

॥ सूर्य जी की आरती ॥

- जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

त्रिभुवन – तिमिर – निकन्दन, भक्त-हृदय-चन्दन ॥ ॥ १ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

- सप्त-अश्वरथ राजित, एक चक्रधारी।

दुःखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी ॥

॥ २ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

- सुर – मुनि – भूसुर – वन्दित, विमल विभवशाली।

अघ-दल-दलन दिवाकर, दिव्य किरण माली ॥ ॥ ३ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

- सकल – सुकर्म – प्रसविता, सविता शुभकारी।

विश्व-विलोचन मोचन, भव-बन्धन भारी ॥

॥ ४ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

- कमल-समूह विकासक, नाशक त्रय तापा।

सेवत साहज हरत अति मनसिज-संतापा ॥

॥ ५ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

- नेत्र-व्याधि हर सुरवर, भू-पीड़ा-हारी।

वृष्टि विमोचन संतत, परहित व्रतधारी ॥

॥ ६ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

- सूर्यदेव करुणाकर, अब करुणा कीजै।

हर अज्ञान-मोह सब, तत्त्वज्ञान दीजै ॥

॥ ७ ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

॥ इति आरती श्री सूर्य जी सम्पूर्णम् ॥

॥ बृहस्पति जी देव की आरती ॥

- जय बृहस्पति देवा, ॐ जय बृहस्पति देवा ।
छि छिन भोग लगाऊँ, कदली फल मेवा ॥ ॥१॥ जय बृहस्पति देवा ।
- तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॥२॥ जय बृहस्पति देवा ।
- चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता ।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ॥ ॥३॥ जय बृहस्पति देवा ।
- तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े ।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े ॥ ॥४॥ जय बृहस्पति देवा ।
- दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी ।
पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी ॥ ॥५॥ जय बृहस्पति देवा ।
- सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो ।
विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी ॥ ॥६॥ जय बृहस्पति देवा ।
- जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहत गावे ।
जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे ॥ ॥७॥ जय बृहस्पति देवा ।

॥ इति आरती बृहस्पति देव सम्पूर्णम् ॥

॥ शनि देव जी की आरती ॥

- जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी ॥ ॥ १॥ जय जय श्री शनिदेव ।
- श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी ॥ ॥ २॥ जय जय श्री शनिदेव ।
- क्रीट मुकुट शीश रजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी ॥ ॥ ३॥ जय जय श्री शनिदेव ।
- मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी ॥ ॥ ४॥ जय जय श्री शनिदेव ।
- देव दनुज ऋषि मुनि सुमरिन नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी ॥ ॥ ५॥ जय जय श्री शनिदेव ।

॥ इति आरती श्री शनि देवजी सम्पूर्णम् ॥

॥ आरती श्री साईं बाबा की ॥

- ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे।
भक्तजनों के कारण, उनके कष्ट निवारण ॥
शिरडी में अव-तरे, ॐ जय साईं हरे ॥ ॥१॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा ।
- दुखियन के सब कष्टन काजे, शिरडी में प्रभु आप विराजे ।
फूलों की गल माला राजे, कफनी, शैला सुन्दर साजे ॥
कारज सब के करें, ॐ जय साईं हरे ॥ ॥२॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा ।
- काकड़ आरत भक्तन गावें, गुरु शयन को चावड़ी जावें ।
सब रोगों को उदी भगावे, गुरु फकीरा हमको भावे ॥
भक्तन भक्ति करें, ॐ जय साईं हरे ॥ ॥३॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा ।
- हिन्दु मुस्लिम सिक्ख इसाई, बौद्ध जैन सब भाई भाई ।
रक्षा करते बाबा साईं, शरण गहे जब द्वारिकामाई ॥
अविरल धूनि जरे, ॐ जय साईं हरे ॥ ॥४॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा ।
- भक्तों में प्रिय शामा भावे, हेमडजी से चरित लिखावे ।
गुरुवार की संध्या आवे, शिव, साईं के दोहे गावे ॥
अखियन प्रेम झरे, ॐ जय साईं हरे ॥ ॥५॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा ।
- ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे ।
शिरडी साईं हरे, बाबा ॐ जय साईं हरे ॥
- श्री सद्गुरु साईंनाथ महाराज की जय॥

॥ आरती श्री साईं बाबा सम्पूर्णम ॥

॥ भगवान श्री धन्वंतरि जी की आरती ॥

- जय धन्वंतरि देवा, जय धन्वंतरि जी देवा ।
जरा-रोग से पीड़ित, जन-जन सुख देवा ॥ ॥१॥ जय धन्वन्तरि देवा ।
- तुम समुद्र से निकले, अमृत कलश लिए ।
देवासुर के संकट आकर दूर किए ॥ ॥२॥ जय धन्वन्तरि देवा ।
- आयुर्वेद बनाया, जग में फैलाया ।
सदा स्वस्थ रहने का, साधन बतलाया ॥ ॥३॥ जय धन्वन्तरि देवा ।
- भुजा चार अति सुंदर, शंख सुधा धारी ।
आयुर्वेद वनस्पति से शोभा भारी ॥ ॥४॥ जय धन्वन्तरि देवा ।
- तुम को जो नित ध्यावे, रोग नहीं आवे ।
असाध्य रोग भी उसका, निश्चय मिट जावे ॥ ॥५॥ जय धन्वन्तरि देवा ।
- हाथ जोड़कर प्रभुजी, दास खड़ा तेरा ।
वैद्य-समाज तुम्हारे चरणों का घेरा ॥ ॥६॥ जय धन्वन्तरि देवा ।
- धन्वंतरिजी की आरती जो कोई नर गावे ।
रोग-शोक न आए, सुख-समृद्धि पावे ॥ ॥७॥ जय धन्वन्तरि देवा ।

॥ इति आरती भगवान श्री धन्वंतरि सम्पूर्णम् ॥

॥ एकादशी जी की आरती ॥

- ॐ जय एकादशी, जय एकादशी, जय एकादशी माता ।
विष्णु पूजा व्रत को धारण कर, शक्ति मुक्ति पाता ॥ ॥ १॥ ॐ जय एकादशी ।
- तेरे नाम गिनाऊं देवी, भक्ति प्रदान करनी ।
गण गौरव की देनी माता, शास्त्रों में वरनी ॥ ॥ २॥ ॐ जय एकादशी ।
- मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष की उत्पन्ना, विश्वतारनी जन्मी ।
शुक्ल पक्ष में हुई मोक्षदा, मुक्तिदाता बन आई ॥ ॥ ३॥ ॐ जय एकादशी ।
- पौष के कृष्णपक्ष की, सफला नामक है ।
शुक्लपक्ष में होय पुत्रदा, आनन्द अधिक रहै ॥ ॥ ४॥ ॐ जय एकादशी ।
- नाम षटतिला माघ मास में, कृष्णपक्ष आवै ।
शुक्लपक्ष में जया, कहावै, विजय सदा पावै ॥ ॥ ५॥ ॐ जय एकादशी ।
- विजया फागुन कृष्णपक्ष में शुक्ला आमलकी ।
पापमोचनी कृष्ण पक्ष में, चैत्र महाबलि की ॥ ॥ ६॥ ॐ जय एकादशी ।
- चैत्र शुक्ल में नाम कामदा, धन देने वाली ।
नाम बरुथिनी कृष्णपक्ष में, वैसाख माह वाली ॥ ॥ ७॥ ॐ जय एकादशी ।
- शुक्ल पक्ष में होय मोहिनी अपरा ज्येष्ठ कृष्णपक्षी ।
नाम निर्जला सब सुख करनी, शुक्लपक्ष रखी ॥ ॥ ८॥ ॐ जय एकादशी ।
- योगिनी नाम आषाढ में जानों, कृष्णपक्ष करनी ।
देवशयनी नाम कहायो, शुक्लपक्ष धरनी ॥ ॥ ९॥ ॐ जय एकादशी ।
- कामिका श्रावण मास में आवै, कृष्णपक्ष कहिए ।
श्रावण शुक्ला होय पवित्रा आनन्द से रहिए ॥ ॥ १०॥ ॐ जय एकादशी ।
- अजा भाद्रपद कृष्णपक्ष की, परिवर्तिनी शुक्ला ।
इन्द्रा आश्विन कृष्णपक्ष में, व्रत से भवसागर निकला ॥ ॥ ११॥ ॐ जय एकादशी ।
- पापांकुशा है शुक्ल पक्ष में, आप हरनहारी ।
रमा मास कार्तिक में आवै, सुखदायक भारी ॥ ॥ १२॥ ॐ जय एकादशी ।
- देवोत्थानी शुक्लपक्ष की, दुखनाशक मैया ।
पावन मास में करूँ विनती पार करो नैया ॥ ॥ १३॥ ॐ जय एकादशी ।
- परमा कृष्णपक्ष में होती, जन मंगल करनी ।
शुक्ल मास में होय पद्मिनी दुख दारिद्र हरनी ॥ ॥ १४॥ ॐ जय एकादशी ।
- जो कोई आरती एकादशी की, भक्ति सहित गावै ।
जन गुरदिता स्वर्ग का वासा, निश्चय वह पावै ॥ ॥ १५॥ ॐ जय एकादशी ।

॥ इति आरती एकादशी सम्पूर्णम् ॥

॥ बाबा बालक नाथ जी की आरती ॥

- ॐ जय कलाधारी हरे, स्वामी जय पौणाहारी हरे,
भक्त जनों की नैया, दस जनों की नैया भव से पार करे ॥ ॥१॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- बालक उमर सुहानी, नाम बालक नाथा,
अमर हुए शंकर से, सुन के अमर गाथा ॥ ॥२॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- शीश पे बाल सुनैहरी, गले रुद्राक्षी माला,
हाथ में झोली चिमटा, आसन मृगशाला ॥ ॥३॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- सुंदर सेली सिंगी, वैरागन सोहे,
गऊ पालक रखवालक, भगतन मन मोहे ॥ ॥४॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- अंग भभूत रमाई, मूर्ति प्रभु रंगी,
भय भज्जन दुःख नाशक, भरथरी के संगी ॥ ॥५॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- रोट चढ़त रविवार को, फल, फूल मिश्री मेवा,
धुप दीप कुदनुं से आनंद सिद्ध देवा ॥ ॥६॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- भक्तन हित अवतार लियो, प्रभु देख के कल्लू काला,
दुष्ट दमन शत्रुहन, सबके प्रतिपाला ॥ ॥७॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- श्री बालक नाथ जी की आरती, जो कोई नित गावे,
कहते हैं सेवक तेरे, मन वाच्छित फल पावे ॥ ॥८॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।
- ॐ जय कलाधारी हरे, स्वामी जय पौणाहारी हरे,
भक्त जनों की नैया, दस जनों की नैया भव से पार करे ॥ ॥९॥ ॐ जय कलाधारी हरे ... ।

॥ इति आरती श्री बाबा बालक नाथ सम्पूर्णम् ॥

॥ बाबा गोरखनाथ जी की आरती ॥

- जय गोरख देवा जय गोरख देवा ।
कर कृपा मम ऊपर नित्य करूँ सेवा ॥ ॥१॥ जय गोरख देवा ... ।
- शीश जटा अति सुंदर भाल चन्द्र सोहे ।
कानन कुंडल झलकत निरखत मन मोहे ॥ ॥२॥ जय गोरख देवा ... ।
- गल सेली विच नाग सुशोभित तन भस्मी धारी ।
आदि पुरुष योगीश्वर संतन हितकारी ॥ ॥३॥ जय गोरख देवा ... ।
- नाथ नरंजन आप ही घट घट के वासी ।
करत कृपा निज जन पर मेटत यम फांसी ॥ ॥४॥ जय गोरख देवा ... ।
- रिद्धी सिद्धि चरणों में लोटत माया है दासी ।
आप अलख अवधूता उतराखंड वासी ॥ ॥५॥ जय गोरख देवा ... ।
- अगम अगोचर अकथ अरुपी सबसे हो न्यारे ।
योगीजन के आप ही सदा हो रखवारे ॥ ॥६॥ जय गोरख देवा ... ।
- ब्रह्मा विष्णु तुम्हारा निशदिन गुण गावे ।
नारद शारद सुर मिल चरनन चित लावे ॥ ॥७॥ जय गोरख देवा ... ।
- चारो युग में आप विराजत योगी तन धारी ।
सतयुग द्वापर त्रेता कलयुग भय टारी ॥ ॥८॥ जय गोरख देवा ... ।
- गुरु गोरख नाथ की आरती निशदिन जो गावे ।
विनवित बाल त्रिलोकी मुक्ति फल पावे ॥ ॥९॥ जय गोरख देवा ... ।

॥ इति आरती श्री गुरु गोरख नाथ जी सम्पूर्णम् ॥